भारत के देवी-देवता

शिरडी के साईं बाबा

शिरडी के साईंबाबा

eISBN: 978-93-5261-026-6
© लेखकाधीन
प्रकाशक: डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.
X-30 ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II
नई दिल्ली-110020
फोन: 011-40712100, 41611861
फैक्स: 011-41611866
ई-मेल: ebooks@dpb.in
वेबसाइट: www.diamondbook.in
संस्करण: 2016
शिरडी के साईंबाबा
लेखक: ओ.पी.झा

विषय सूची

1. बचपन

2. उनका अचानक गायब हो जाना

3. चण्ड पाटिल से मुलाकात

4. साईं बाबा का जानवरों से प्रेम

5. चण्ड को चमत्कार-दर्शन

6. उस फ़कीर का नाम ‘साईं’ पड़ा

7. खण्डोक्ष के बारे में

8. खण्डोक्ष का संदेश

9. द्वारका भाई: बाबा का निवास स्थल

10. बाबा: सबके मददगार

11. बाबा की धूनी

12. पानी से दीप जलाना

13. लोगों को तूफान से बचाना

14. शमा बाबा के घनिष्ट हुए

15. बच्चों को चांदी के सिक्के देना

16. लोगों से धन स्वीकार करना

17. शिरडी को एक नग मिला

18. एक विश्वात्मा

19. बाबा ने एक कुत्ते का रूप धरा

20. महान सपाती की सहायता

21. एक तपेदिक के मरीज की सहायता

22. स्त्री को मुश्किल से निकाला साईं बाबा ने

23. तीव्र दिन की समाधि

24. प्रसिद्ध व्यक्तियों का शिरडी में आना शुरू

25. नाना साहब चण्डोरकर का आना

26. मैना ताई के विवाह में प्रकट होना

27. बाबा एक कोचवान के रूप में

28. दसगान्

29. उपासनी महाराज

30. राधाकृष्ण माई

31. एच.एस.दीक्षित

32. मेघा

33. हेमद पंत और गोपाल राव बूटी

34. अंतिम क्षण

शिरडी के साईंबाबा

बचपन

सन् 1854 का वाक्या है। 16 वर्ष का एक लड़का शिरडी में एक नीम के पेड़ के नीचे समाधि में बैठा था। जहां वह लड़का समाधि लगा रहा था, उस जगह को अब शिरडी के साईं मंदिर में 'गुरुस्थान' कहा जाता है। इससे पहले शिरडी की एक वृद्ध महिला नाना चोपदार की मां ने उसे देखा था।

कालांतर में वही बालक शिरडी के साईं बाबा या शिरडी साईं बाबा के नाम से मशहूर हुआ। सन् 1854 के पूर्व साईं बाबा के बारे में कोई प्रामाणिक सूचना नहीं मिलती। पहले की जो भी सूचना उपलब्ध है वह मनगढंत प्रयास ही लगता है। बाबा ने स्पष्ट शब्दों में किसी को भी अपना जन्म स्थान, धर्म या जाति नहीं बताई थी।

सन् 1856 में शिरडी पूर्व निजाम रियासत के अहमदनगर देश एक छोटा-सा ग्राम था। अब यह इलाका महाराष्ट्र में आता है। यह कोपर गांव रेलवे स्टेशन से मात्र 15 कि.मी. दूर है।

बचपन में बालक शिरडी नीम के पेड़ नीचे बैठे हुए।

उनका अचानक गायब हो जाना

शुरू में साईं बाबा का गांव वालों से कोई मेल-मिलाप नहीं होता था। पर वहां एक बड़ी धार्मिक स्वभाव की एक महिला थी- न्याजा बाई, जिनके मन में इस युवा योगी के लिए बड़ी श्रृद्धा थी। वही उनकी खाने आदि की चिंता करती थी और देती भी थी। बाबा